International Journal of Arts & Education Research

पुनर्जागरण काल में नारी की स्थिति की संक्षिप्त विवरण

विपिन कुमार*[1]

[1]अध्यापक, एन0बी0वी0पी0 इण्टर कालिज, मेरठ।

यह सर्वविदित तथ्य है कि अंग्रेजी राज का जो प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा वह उन सभी प्रभावों से अलग था जो उस समय तक भारत पर हुए थे। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अंग्रेजों से पूर्व भी भारत पर अनेक विदेशी आक्रांताओं ने आक्रमण किया था तथा भारतीयों को हराकर भारत पर राज किया था परन्तु उस समय तक भारत ने कभी भी आत्मविश्वास नहीं खोया था और उसे सदैव यह आन्तरिक विश्वास था कि उसकी सभ्यता तथा संस्औति अन्य विदेशी शासकों की संस्औति से अधिक उत्तम है। प्रायः ऐसा हुआ कि अंग्रेजी शासकों से पहले भारत में जिन विदेशी शासकों का आगमन हुआ था उन्होंने भारतीय धर्म, संस्औति तथा सभ्यता को अपना लिया था तथा वे भारतीय समाज का अभिन्न अंग बन गये।[2] परन्तु जब भारतीय समाज एक निश्चल, निष्प्राण तथा अत्याधिक दयनीय था, उसी समय भारत का एक ऐसे आक्रान्ता से सामना हुआ जो न केवल रंग में श्वेत था अपितु अपने आपको सामाजिक तथा सांस्औतिक रूप से अत्याधिक उत्तम समझता था। यद्यपि प्रारम्भ में ऐसा प्रतीत होता था कि सभ्यता की इस दौड़ में भारत पिछड़ जाएगा- परन्तु इसी समय पश्चिमी शिक्षा प्राप्त नवयुवकों ने न केवल हिन्दू धर्म तथा समाज से नाता तोड़ने से इंकार कर दिया वरन् हिन्दू धर्म तथा समाज में सुधार करने का बीड़ा भी उठाया। इसी के फलस्वरूप भारत की स्पन्दनशील जीवनी शक्ति पुनः जागृत और सक्रिय हुई।[3] इसी समय मार्ग में भटके हुए भारतवासियों को पुनः सदमार्ग पर लाने और देश का पुर्ननिर्माण करने हेतु भारत में अनेक धार्मिक आन्दोलन चल पड़े, जिन्होंने देश में राजनीतिक तथा सांस्औतिक पुनर्जागरण के उद्भव एवं प्रसार में योगदान किया।

IJAER

*Corresponding Author